Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 666–674

COMMERCIALIZATION AND CONTEMPORARY DEVELOPMENT OF FOLK PAINTINGS

व्यवसायीकरण व लोक चित्रकलाओं का समकालीन विकास

Shubhra Baranwal [1]

[1] Smt B. D. Jain Girls Pg College, Affiliated of Dr. Bhim Rao Ambedkar University, Agra, UP, India

Corresponding Author
Shubhra Baranwal,
shubhrabaranwal1@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.1266

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: This research paper is based on the commercialization of Indian folk paintings and how Indian folk paintings has gained a strong position in the world art market. The commercialization of folk painting was initiated as a preservation effort. Folk paintings was created primarily on wall and floors to worship nature and gods, but now it has become a major source of income. When art conservators visited Indian villages, they found beautiful paintings on the walls of village houses and temples. Subsequently, efforts were made to preserve them. These villagers were given art materials to make big artworks and then these art pieces were showcased in global art galleries. Result in capturing the attention of art enthusiasts and generating a demand to buy these folk paintings.For the artists, their art became their livelihood. Today, Indian folk art is witnessing a surge in popularity, with digital platforms and e-commerce playing an important role. Work is being done at the national and international levels to preserve them, which will help keep these arts alive in the future.Currently, a few folk arts have prominent place in the commercialization of art and this research study is based on the commercialization of all of these folk paintings.

Hindi: यह शोध लेख भारतीय लोक चित्र कलाओं के व्यवसायिक स्वरूप पर आधारित है अर्थात किस प्रकार भारतीय लोक चित्रकलाओं ने आगे बढ़कर विश्व कला बाजार में अपना समृद्ध स्थान बनाया। लोक चित्र जो पूर्व में प्रकृति व ईश्वर की उपासना के लिए भित्ति व धरातल पर निर्मित किये जाते थे वही चित्र वर्तमान में प्रमुख आय का माध्यम बन गये हैं। लोक कलाओं का व्यवसायीकरण किया गया ताकि इन्हे संरक्षित किया जा सके, जब कला संरक्षकों ने भारत के गाँवो का भ्रमण किया तब उन्हे गाँवो के घरों व मन्दिरों की दीवारों पर सुन्दर चित्र बने हुए दिखे, इसके पश्चात् इनका संरक्षण किया गया। गाँवो के इन लोगो को कला सामग्री देकर बड़े-बड़े चित्र बनवाये गये व देश-विदेश में इन चित्रों की प्रदर्शनियाँ लगाई गयी। जिससे कला पे्रमियों का ध्यान लोक कलाओं की तरफ आकृष्ठ हुआ व समाज में इन चित्रों को खरीदने की मांग होने लगी। इनकी कला इनके आजिविका का साधन बनी। वर्तमान में भारतीय लोक कलाओं की मांग में अत्यधिक वृद्धि हो रही है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान डिजिटल माध्यम व ई-कार्मस का है क्योकि इन माध्यमों से अपनी कला को कम से कम समय में अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाया जा सकता है। इनके संरक्षण में राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर कार्य किया जा रहा है जो भविष्य में भी इन कलाओं को जीवित रखने में सहायक रहेंगीं। वर्तमान में कुछ लोक कलाएँ हैं जिनका कला व्यवसाय में महत्त्वपूर्ण स्थान है तथा यह लघु शोध अध्ययन उन सभी लोक चित्रकलाओं के व्यवसायिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

Keywords: Folk Art, Commercialization, Conservation of Culture, Digital Medium, लोक कला, व्यवसायीकरण, संस्कृति का संरक्षण, डिजिटल माध्यम

1. प्रस्तावना

किसी भी कला का व्यवसायीकरण उसके संरक्षण के लिए किया जाता है ताकि वह कला जीवित रहे। भारत अपनी विभिन्न लोक कलाओं के लिए विश्व विख्यात है। किसी भी कला को संरक्षित करने का सबसे विशिष्ट मार्ग है कि उसे लोकप्रिय बना दो जिससे वह समाज में स्थायी रहे, व्यवसायीकरण का स्पष्ट

अर्थ यह है की उस कला का प्रचार प्रसार करना व लोगो का ध्यान उस कला की प्रति आकृष्ठ करना तथा उस कला के प्रयोग के लिए लोगो को प्रोत्साहित करना जिससे लोगो में रूचि उत्पन्न हो तथा वह उस कला को खरीदने के लिए उत्साहित हो, इसी प्रकार भारत के कुछ महान व्यक्तियों ने भारतीय कला के संरक्षण के लिए इसके व्यवसायीकरण में अपना महत्वर्पूण योगदान दिया।

भारतीय लोक चित्र कलाओं के व्यवसायीकरण का प्रारम्भिक स्वरूप- जब इन लोक कलाओं की खोज में कला विद्वानों ने भारत भ्रमण किया व कलाकारों से साक्षात्कार किया तब तक उन स्थानीय कलाकारों को यह ज्ञान नही था की यह चित्र घरों की दिवारों के अलावा अन्य माध्यमों पर भी चित्रित किये जा सकते है। उनके लिए तो यह चित्रकला मात्र एक परम्परा, प्रकृति व ईश्वर की उपासना ही था। भारतीय धरोवर के अन्वेषण में घरों की दीवारों पर चित्रित यह लोक चित्र जब कला समीक्षकों व कला विद्वानों को दिखे तब वह आश्चर्यचकित रह गये की यह तो अनन्त आकर्षक शैलियों का भन्डार है। तत्पश्चात् कलाविंदो ने उन ग्रामीण कलाकारों को कागज, रंग, तूलिका देकर दीवार पर चित्रित उन चित्रों को कागज पर बनाने को कहा जिससें इन कलाओं को विश्व से परिचय कराया जा सके व कला प्रेमियों का ध्यान आकृष्ठ किया जा सके।

भारतीय लोक चित्र कलाओं का व्यवसायिक उद्गम- लोक कलाओं का उद्गम किसी न किसी घटना या विशेष प्रसंग से जुड़ा हुआ है उदाहरण के रूप में मथुरा की सांझी लोक चित्रकला जिसका इतिहास लगभग 400 वर्ष प्राचीन माना गया है। इस कला का प्रारम्भ कृष्ण काल अर्थात द्वापर युग से माना जाता है। लोगो का ऐसा कथन है कि राधा जी सायंकाल में भगवान श्रीकृष्ण को रिझाने के लिए अपने गृह के द्वार पर फूलों से रंगोली अलंकृत करती थी कि जब श्रीकृष्ण अपने गायों को चराकर इस मार्ग से गुजरेंगे तो यह रंगोली देखकर प्रसन्न होंगे व कुछ पल यहाँ बैठकर मधुर बांसुरी बजायेंगे, आगे चलकर समय के साथ कृष्ण भक्तों ने इस अलंकरण को स्वयं की परम्परा में परिवर्तित कर लिया। वर्तमान समय में श्रीकृष्ण भक्त हर वर्ष श्राद्ध पक्ष के 16 दिनों तक अपने पीतर के रूप में मन्दिरों व अपने घरों में श्रीकृष्ण जी के जीवन से सम्बन्धित कृष्ण लीलाओं को फूलो व रंगों से धरातल व दीवारों पर सजाते हैं जिसे हम सांझी कला के नाम से संबोधित करते हैं। सांझी अर्थात सांझ;शांमद्ध में बनाई जाने वाली कला, वर्तमान में भी इस परम्परा में कार्यरत सांझी कलाकार हैं। सांझी कला का व्यवसायीकरण दिल्ली क्राफ्ट काउंसिल के सदस्यों द्वारा किया गया। दिल्ली की एक कला प्रदर्शनी में सांझी कलाकार विजय कुमार वर्मा का दिल्ली क्राफ्ट काउंसिल के सदस्यों से मिलना हुआ इन सांझी कलाकारों की कला को देख इन सदस्यों ने विजय वर्मा को कहा की अपनी इस कला को उपयोगी बनाओं कार्ड, लिफाफे, ट्रे व अन्य वस्तुओं पर इन चित्रों को चित्रित करो, इस प्रोत्साहन से सांझी कलाकारों द्वारा ऐसे ही विभिन्न उपयोगी माध्यमों पर चित्रण कार्य किया गया तथा दिल्ली क्राफ्ट काउंसिल के सदस्यों की सहायता से दिल्ली में इस नवीन सांझी कला का स्टॉल लगाया गया व इन कलाओं के विक्रय में काउंसिल के सदस्यों ने सहायता की व इन्हे प्रोत्साहित किया। इसी प्रकार सभी लोक चित्रकलाओं के विकास की अपनी-अपनी कहानियाँ हैं।

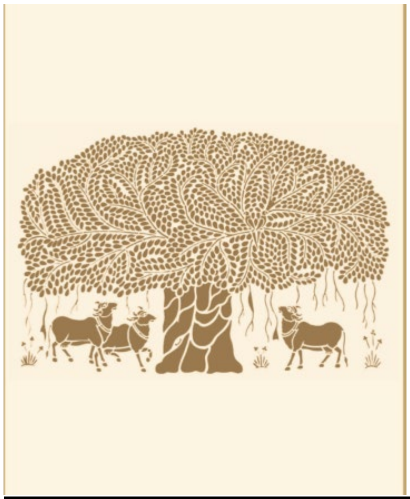

चित्र 1 सांझी लोक चित्रकला

https://www.ezcc-india.org/pdf/book/sanjhi.pdf

लोक कलाओं का विकास व कला संरक्षकों का योगदान- मुख्य रूप से भारतीय लोक चित्रों को प्रकाश में लाने का श्रेय कमलादेवी चट्टोपाध्याय व पुपुल जयकर को जाता है। कमलादेवी चट्टोपाध्याय एक भारतीय समाजसुधारक, स्वतंत्रता सेनानी तथा भारतीय हस्तकला के क्षेत्र में नवजागरण लाने वाली महिला थी।ख्1, इन्होने भारतीय कला के संरक्षण के लिए 1964 में चेन्नई में 'क्राफ्ट काउंसिल ऑफ इण्डिया' की शुरूआत की थी। पुपुल जयकर एक लेखिका व भारतीय सांस्कतिक कार्यकर्ता थी। इन्हे स्वतंत्रता पश्चात् पारम्परिक तथा ग्राम कला, हथकरघा व हस्तिशिल्प के पुनरूद्धान के लिए जाना जाता है। इन्होने भारतीय कला उत्सवों की श्रृंखला 1980 में फ्रांस, अमेरिका व जापान में आयोजित किये जिससे पश्चिम में भारतीय कलाओं को लोकप्रियता प्राप्त हुई।ख्2, इन्दिरा गांधी के कहने पर कमलादेवी चट्टोपाध्याय व पुपुल जयकर ने भारत के गाँवो का भ्रमण किया और इन लोगो ने सभी लोक कलाओं को प्रकाश में लाने का कार्य किया। इन्होने जब विभिन्न लोक कलाओं को देखा व यह आभास किया की हर प्रदेश की अपनी अलग कला शैली, मान्यता व संस्कृति है। यह लोक कलाकार अपनी प्रकृति व ईश्वर की साधना हेतु इन सुन्दर आकृतियों को रेखंकित कर रहे है परन्तु उन कलाकारों को यह ज्ञात नही था की इस कला से वह समाज में अपना एक विशिष्ठ स्थान बना सकते है व इसे अपने प्रमुख आय का माध्यम भी बना सकते है। कमलादेवी व इनके साथियों ने लोक कलाकारों को समस्त आधुनिक कला सामग्रीयाँ कागज, रंग, तूलिका देकर उन से चित्र बनवाये, यह चित्रण विधि कलाकारों के लिए पहला अनुभव था। अलग अलग क्षेत्रों में कलाकारों को उनकी क्षेत्रीय कला में प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये जिससे कलाकारों के कौशल का विकास हो व उन्हे स्वयं की कला से आजीविका भी प्राप्त हो। जब पूरे देश से बहुत सारे चित्रों का निर्माण हो गया तब इन चित्रों को संरक्षित व प्रदर्शित करने के लिए दिल्ली में भारतीय शिल्प संग्रहालय की स्थापना 1956 में की गयी जिससे लोक कला व कलाकारों को एक समृद्ध स्थान प्राप्त हुआ जिसमें कलमकारी, वर्ली, मधुबनी व अन्य लोक चित्र कलाएँ थी। स्वयं को अपनी कला के माध्यम से पहचान बनाने के लिए यह संग्रहालय एक केन्द्र स्थान बन गया जहाँ कई कलाकारों को प्रसिद्धि प्रदान हुई उदाहरण- **मधुबनी की गंगा देवी, यमुना देवी व सीता देवी, वर्ली की सुमन संथालिया, गांेड के जनगढ़ सिंह श्याम, भील की भूरी बाई** जैसे अन्य लोक कलाकारों को पहचान व प्रसिद्धि प्राप्त हुई। लोगो में इन चित्रों को देखने व खरीदने की रूची उत्पन्न हुई। ये लोक चित्र ऊँचे से ऊँचे दामों पर बेचे गये। वर्तमान में इन कलाकारों के चित्र लाखों रूपये में खरीदे जाते हैं।

भारतीय लोक चित्र कलाओं का व्यवसायिक स्वरूप-

- **महाराष्ट्र की वर्ली चित्रकला-** समय के साथ-साथ लोक कलाकारों में जागरूकता आने लगी है, उदाहरण के रूप में वर्ली चित्रकला, जो पारम्परिक वर्ली चित्र थे उनमें प्रकृति के ही विभिन्न दृश्यों व कुछ मुख्य अवसरों को सीमित कला साधनों से घरों की दीवारों पर चित्रित किया जाता था। जब जिव्या सोमा म्हशे ने इन चित्रों को केवल किसी प्रमुख धार्मिक कार्यो पर बनाने के अलावा अपने दैनिक जीवन के आधार पर भी बनाना आरम्भ किया तब सन् 1970 में वारली कला में परिवर्तन आया। इनके इस हुनर को जल्द ही पहचाना गया और सन् 1976 में इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया।ख्3, कलाकार जिव्या शोमा म्हशे पहले ऐसे वर्ली कलाकार थे जिन्होने वर्ली चित्र को कागज पर बनाया व अपने चित्रों की प्रर्दशनी लगाई। इनसे प्रभावित होकर अन्य कलाकारों ने व्यवसायिक लाभ के लिए वर्ली चित्रों को बनाना प्रारम्भ किया। गणेश महादेव वांगड़ वर्ली कला को अपने व्यवसाय के रूप में प्रयोग किये, आज वर्ली कला के चित्र कपड़ो व कागज पर आधुनिक कलाकारों द्वारा निर्मित की जा रही है। 'श्रीमती प्रतिभा वाघ' एक आधुनिक वारली कलाकर हैं जिन्होने वर्ली कला का समीप से अध्ययन किया है।ख्4,श्रीमति हंसाबेन मेहता जो इस कला से अत्यधिक प्रभावित हैं तथा इस कला को बनाने के साथ-साथ इसे अन्य लोगो को सिखती भी हैं।ख्5,सुमन संथालिया, इन्होने भी वर्ली कला को पुनर्जीवित किया। इन्होने वर्ली कला का प्रशिक्षण लिया व प्रशिक्षण के पश्चात् इस कला में नवीन प्रयोग किये उदाहरण वर्ली शैली के चित्रों को पॉटरी, हैंडमेड पेपर, लकड़ी की सजावटी वस्तुओं और कपड़ो पर उकेरा व इनके द्वारा किया गया यह नवीन प्रयोग पसन्द किया जाने लगा जिससे इनकी कलाकृतियों की मांग होने लगी। इस वजह से वह दिल्ली स्थित कॉटेज इम्पोरियम में नियमित रूप से अपनी कलाकृतियों की

सप्लाई करती हैं।ख्6, जब यह कलाकार कार्यरत थी तब इनकी कलाकृतियों की मांग समाज में अत्यधिक रहती थी। इन्होने वर्ली की महिला कलाकारों से चित्रण कार्य कराया जिससे उन महिला कलाकारों को आजीविका प्राप्त हुई। सुमन द्वारा बनाई गई पॉटरी की कई प्रदर्शनियाँ 'नेशनल क्रॉट म्यूजियम'में आयोजित की जा चुकी है।ख्7,2011 में 'कोका कोला' के एक विज्ञापन में वर्ली चित्र का प्रयोग किया गया इस विज्ञापन के पश्चात् वर्ली लोक कला और अधिक प्रसिद्ध हो स्थित है। इस संघ के सदस्यों द्वारा महाराष्ट्र के पालघर के दहाणु कस्बे में 'वेलकम टू वर्ली वल्ड्' नामक एक दुकान स्थापित की गयी है। जहाँ वर्ली कला के चित्र व हस्तनिर्मित सजावटी व उपयोगी वस्तुओं को बेचा जाता है। यह सभी कलात्मक रूप वर्ली कलाकारों द्वारा ही बनाये जाते हैं जिसमें उनके कार्य के अनुसार उन्हे उचित आय भी प्राप्त होती है। सचिन तांगवी व इनके साथी मिलकर यह दुकान पिछले 14 सालों से चला रहे हैं जिससे कलाकारों को रोजगार भी प्राप्त हो रहा है व संस्कृति का संरक्षण भी हो रहा हैं। इस संघ के प्रयासों से 2011 में वर्ली लोक चित्रकला को जी. आई. टैग भी प्राप्त हुआ।

चित्र 2 वर्ली लोक चित्रकला
https://www.thecraftyangels.com/a-complete-warli-painting-tutorial-guide/

- **मध्य प्रदेश की गोंड व भील लोक चित्रकला-** इसी प्रकार मध्य प्रदेश की प्रसिद्ध गोंड व भील लोक चित्रकला को प्रकाश में लाने का श्रेय जे. स्वामीनाथन को जाता है। गोंड कलाकार जनगड़ सिहं श्याम भारत भवन, भोपाल में कार्य करते थे। जे. स्वामीनाथन जब जनगड़ सिहं श्याम के गाँव का भ्रमण करने गए तब उन्होने गाँव के प्रत्येक घरों में गोंड चित्रों को बने देखा तब जे. स्वामीनाथन ने जनगड़ सिहं श्याम से उन चित्रों कागज पर बनाने को कहा और यहाँ से गोंड कला को पहचान प्राप्त हुई जो विदेशी भारत भ्रमण पर आते थे वे जनगड़ सिहं श्याम के चित्रों को खरीदने में रूचि लेते थे व खरीद कर ले भी जाते थे। धीरे-धीरे इन्हे पहचान मिलने लगी और इन्हे मिथिला संग्रहालय, टोकयो, जापान में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ जिसके उपरान्त जनगड़ सिहं श्याम वही कार्यरत रहे। जनगड़ की मृत्यु के पश्चात् इनके चित्रों की प्रदशर्नी 'राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय',नई दिल्ली में प्रदर्शित की गयी जिसके उपरान्त यह और अधिक प्रसिद्धि हुए तथा इनके चित्रों को खरीदने के लिए लोग इच्छुक होने लगे। जनगड़ सिहं श्याम की पुत्री जापानी श्याम भी एक गोंड कलाकार हैं जो वर्तमान गोंड चित्रकला का प्रशिक्षण भी देती हैं। वर्तमान समय में समकालीन गोंड चित्रकार के रूप में भज्जू श्याम प्रसिद्ध हैं। यह दिल्ली सहित पेरिस व लंदन में भी अपने चित्रों की प्रदर्शनी लगा चुके है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने 'मन की बात में' भज्जू श्याम की चर्चा करते हुए कहा की भज्जू श्याम गोंड चित्रकला के एक प्रमुख कलाकार हैं। व्यवसायीकरण के इस क्रम में 2023 में मध्य प्रदेश के पर्यटक विभाग ने एक टेलीविजन विज्ञापन बनाया जिसमें मध्य प्रदेश के विभिन्न पर्यटन स्थलों को गोंड चित्रों के डिजिटल एनीमेशन से दिखाया गया। सभी पर्यटन स्थलों को विभिन्न पशु पक्षियों के प्रतीकात्मक रूप द्वारा प्रदर्शित किया गया

तथा इन पशु - पक्षियों को गोंड चित्रण शैली में बनाया गया जो गोंड कला का परिचय देती है।

चित्र 3 गोंड लोक चित्रकला

https://gondart-india.com/en/gallery/

मध्य प्रदेश की भील जनजाति कला की कलाकार भूरी बाई जिनसे भील कला को विश्व स्तर पर पहचान प्राप्त हुई। ये अपने पति के साथ भारत भवन, भोपाल में काम करती थी। भील समुदाय में शरीर पर टैटू बनाने की परम्परा है, यह परम्परा इनके दैनिक जीवन का प्रमुख भाग है। इसी परम्परा के टैटू भूरी बाई के शरीर पर बने जब जे. स्वामीनाथन ने देखा तो इन्हे कहा की इस टैटू आकृति को कागज पर चित्रित करो, तत्पश्चात् भूरी बाई ने सर्वप्रथम भील चित्रकला को कागज पर निर्मित किया था। इसके पश्चात् भूरी बाई ने 'राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय', नई दिल्ली में अपने चित्रों का स्टॉल लगाया जहाँ पहली बार इनके चित्र ख़रीदे गये व लोगो द्वारा और चित्र बनाने का काम भी मिलने लगा। भूरी बाई वर्तमान समय में भोपाल में स्थित आदिवासी लोककला अकादमी के लिए चित्रकार के रूप में कार्यरत हैं। मानव संग्रहालय, भोपाल, मध्य प्रदेश के लोक कलाकारों के चित्रों को खरीद कर उन्हे बेचता है।

चित्र 4 भील लोक चित्रकला

https://bhilart.com/

- **बिहार की मधुबनी लोक चित्रकला-** इसी क्रम में विश्व प्रसिद्ध लोक चित्रकला मधुबनी जिसका इतिहास 2500 वर्ष प्राचीन माना जाता है। इस लोक कला पर चर्चा करे तो मिथिला लोक कला में कार्य करने वाले कलाकारों की संख्या काफी अधिक बड़ गयी है क्योकि सरकार के प्रयासों व ई-कॉमर्स की सहायता से मधुबनी लोक चित्रों का अधिक प्रचार-प्रसार किया गया है। मधुबनी फोक पेंटिंग प्रोडयूसर कंपनी के निदेशक रवींद्र कुमार बताते हैं कि पाँच-छह वर्षो में मधुबनी पेंटिंग के विविध उत्पादों का व्यापार लगभग 100 करोड़ रूपये का हो चुका है। वर्ष 2018-19 तक यह 55-60 करोड़ था।ख्8, अगर हम प्रारम्भ से चर्चा करे तो मधुबनी कला का प्रारम्भ राजा जनक के काल से माना जाता है कि उन्होने सीता-

राम विवाह के दौरान सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्र में सीता व राम जी के विवाह के दृश्यों को बनवाया था। मधुबनी लोक चित्रकला को सर्वप्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय 1934 में डब्लू0 जी0 आर्चर को जाता है। इन्होने ही सर्वप्रथम मधुबनी लोकचित्रों के अद्भुत कलात्मक स्वरूप पर प्रकाश डाला था। दूसरी बार 1937 से 1938 में दरभंगा व पूर्णियाँ जनपदों के आतंरिक भागों का सर्वेक्षण किया था और मिथिला के विस्तृत क्षेत्र में उपलब्ध भित्ति चित्रों का अध्ययन तथा छविचित्रों का सकंलन किया था। आर्चर महोदय ने पहली बार ''मैथिल चित्र'' के नाम से प्रभुत्व भारतीय कला पत्रिका मार्ग एक सचित्र कला पे्रमियों का ध्यान मधुबनी लोक कला के प्रति आकृष्ट किया। आर्चर महोदय से प्रेरित होकर 'श्रीमती पुपुल जयकर तत्कालीन अखिल भारतीय हस्तशिल्प प्रोत्साहन और निर्यात बोर्ड की अध्यक्षा ने छठें व सातवें दशक के मध्य मिथिला का भ्रमण किया।ख्9, इन्होने चित्रों व चित्रकारों का पुनरूत्थान किया। युवा कलाकार कुलकर्णी व पटना के कलाकार उपेन्द्रनाथ महारथी ने मधुबनी कलाकारों को कागज, रंग व अन्य सामग्री देकर चित्र बनवाये जिससे समय के साथ जितवारपुर की सीता देवी, ऊषा देवी, यमुना देवी व राठी की महासुन्दरी देवी को पहचान प्राप्त हुई। 1973 एवं 1975 में पेरिस में मधुबनी चित्रों की प्रदशर्नी आयोजित की गयी। जिसके परिणामस्वरूप मिथिला के लोक चित्रों की पूरे विश्व में प्रसिद्धि बढ़ती गयी। लाखों रुपयों के मधुबनी चित्र पोलैण्ड में खरीदे गये व फ्रांस, जर्मन, हॉलैण्ड, अमेरिका, जापान में भी मधुबनी चित्रों का प्रदर्शन हुआ। भारत के विभिन्न क्षेत्रों जैसे अहमदाबाद, दिल्ली में विशाल अट्टालिकाओं, बड़े होटलों में मधुबनी चित्रकला को सजाने के लिए ग्रामीण चित्रकारों से चित्र बनवाये गये। सूती व रेशमी वस्त्रों पर भी मधुबनी चित्रों का अंकन किया गया, जो वर्तमान में आधुनिक समाज के व्यक्तियों के लिए फैशन के रूप मे पसंद किया जा रहा हैं। एक जापानी पर्यटक द्वारा गंगा देवी का मधुबनी चित्र खरीदा गया जिसे जापान में हासेगावा ने देखा और वह यह चित्र देखकर अधिक प्रभावित हुए और वह मधुबनी की खोज में भारत का दौरा किए। इनके मधुबनी शैली पर सफल शोध के उपरान्त इन्होने जापान, टोक्यो में 1982 में मिथिला संग्रहालय की स्थापना की जिसमें सीता देवी, गंगा देवी, गोदावरी दत्त व अन्य मधुबनी चित्रकारों के चित्रों को प्रदर्शित किया गया हैं। 2022 में मिथिला कला को बढ़ावा देने के लिए बिहार के मधुबनी जिला सैराठ में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा 'मिथिला चित्रकला संस्थान तथा मिथिला ललित संग्रहालय' की स्थापना की गयी। यहाँ प्रसिद्ध मधुबनी चित्रकारों के चित्रों को संग्रहित किया गया है जिसमें प्रसिद्ध मधुबनी चित्रकार गोदावरी दत्त के अर्द्धनारीश्वर चित्र को यहाँ संग्रहित किया गया है। यह संस्थान मधुबनी चित्रकला को संरक्षण व व्यवसायिक रूप प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 'मिथिला अस्मिता' यह एक गैर लाभकारी लोक कला संगठन है जो मधुबनी चित्रकला व कलाकारों को प्रोत्साहन के साथ - साथ रोजगार भी देती है। यह महिला कलाकारों द्वारा वीडियो कॉन्फेरन्सिंग के माध्यम से वैश्विक स्तर पर मधुबनी चित्रों की कार्यशाला आयोजित कराता है। इस संगठन ने नीति आयोग के साथ कोविड की प्रथम लहर में पूरे भारत में महिला स्वयं सहायता के लिए मॉस्क निर्माण का नेतृत्व किया। 'मिथिला पेंटिंग ग्राम विकास परिषद' के संचालक षष्ठिनाथ झा का कहना है कि 70प्रतिशत कलाकार स्वयं व्यापार संचालन कर रहे है। कालेज जाने वाली गाँवो की बालिकाएं अब आर्ट, डिजाइनिंग और मार्केटिंग का प्रशिक्षण ले रही है । पूरा व्यापार मोबाइल व लैपटाप से हो रहा है।ख्10, 2023 में भारत मंडपम, दिल्ली में आयोजित जी-20 सम्मेलन में लहेरियागंज की राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त मधुबनी कलाकार शान्ति देवी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को चंद्रयान चित्र भेट किया था। इस सम्मेलन में शान्ति देवी ने कहा कि मधुबनी चित्रकला ने ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया है। वर्तमान समय में हमारे चित्रों को विदेश में अच्छे मूल्य देकर खरीदा भी जा रहा है जो एक सकारात्मक आर्थिक बदलाव है।

चित्र 5 मधुबनी लोक चित्रकला

https://authindia.com/types-of-madhubani-painting/

- **आन्ध्र प्रदेश की कलमकारी लोक चित्रकला-** अब हम उस लोक कला पर चर्चा करेगें जो दक्षिण भारत में फली-फूली, हम बात कर रहे हैं कलमकारी की जो भारत तथा विदेश दोनो स्थानों पर अत्यधिक लोकप्रिय व मांग में रहती है। यह कला भारत की धार्मिक संस्कृति की पहचान है जो मन्दिरों के पर्दों, रथ के झण्डों, पट्चित्रों, व मन्दिर के चारों ओर समृद्ध हुई। प्राचीन समय में चित्रकारों का संघ यात्रा करता और पौराणिक विषयों पर कहानियाँ कहता था व कहानी को दृश्यमान करने के लिए कहानी से सम्बन्धित सचित्र पट्चित्रों का उपयोग करता था। यह कला लगभग 3000 ई.पू. से भी प्राचीन है जिसका जन्म आन्ध्र प्रदेश के मछलीपट्नम तथा श्रीकलाहस्ती में हुआ। इसे हाथ से कपड़े पर प्राकृतिक रंगों द्वारा बनाया जाता है तथा इस सम्पूर्ण चित्रण कार्य में 23 चरण शामिल होते है। 11वी. शती. के आस-पास फारसियों ने धन लाभ की अपेक्षा में मछलीपट्नम के बंदरगाह की यात्रा की तो उन्हे सूचित हुआ कि भारत में उत्तम बनावट के वस्त्र उपलब्ध है जिसे हाथों द्वारा ब्लाक से मुद्रित किया जाता है। फारसियों ने इन वस्त्रों से कालीन, पर्दे, कुर्ते व साड़ियाँ बनवाई व इन्हे खरीदा, यहाँ से कलमकारी वस्त्रों का व्यापार प्रारम्भ हुआ। इस कला के संरक्षण में समाज सुधारक कमलादेवी ने भारतीय कलाओं को पुनःजीवित किया। इन्होने 1952 में ‘अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड’ की स्थापना की जिसका उद्देश्य हस्तशिल्प के विकास कार्यक्रमों पर कपड़ा मंत्रालय;डपदपेजतल व िज्मगजपसमद्ध को सलाह देना था। इसे भारत सरकार द्वारा 2020 में कोविड-19 महामारी के दौरान समाप्त कर दिया गया था। इस बोर्ड के माध्यम से कलमकारी को पुनः जोड़ने का प्रयास किया गया। श्रीकलाहस्ती में कलमकारी प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गयी व कलाकारों को कलमकारी चित्रण शैली में ही चित्रण कार्य कराया जिनसे कलाकारों को रोजगार प्राप्त हुआ जिसके परिणामस्वरूप कलाकारो को पुनः पहचान प्राप्त हुई। कमलादेवी ने कलमकारी लोक कलाकारों के विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई फैशन डिजाइनरो ने अपने वस्त्रों में कलमकारी को चित्रित करवाया। वरिष्ठ कलाकार जे. गूरूअप्पा चेट्टी को कलमकारी लोक कला के पुनर्जागरण के लिए जाना जाता है। इन्होने कमलादेवी के साथ मिलकर कार्य किया था। श्री काशी शिव प्रसाद चेट्टी इन्होने कलमकारी का प्रशिक्षण श्रीकलाहस्ती में प्राप्त किया। वर्तमान में इन्होने अपने शहर कुरनूल में ‘कलमकारी गुरूकुरू’ की स्थापना की जहाँ ये कलमकारी का प्रशिक्षण देते है साथ ही आॅनलाईन माध्यम से भी प्रशिक्षण देते है। कलमकारी के अन्य कलाकार पिटचुका श्रीनिवास जिन्होने पेडना मछलीपट्नम में कलमकारी कला को जीवित रखा हुआ है। यह कलमकारी की ब्लाॅक प्रिन्टिग शैली में कार्य करते हंै। इन्होने अपने पिता श्री पी. वी. सुब्बैया से कलमकारी कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्होने कलमकारी लोक कला के संरक्षण व प्रोत्साहन के लिए 2017 में पेडना के कृष्ण जिले में कलमकारी संग्रहालय को स्थापित किया जिसके माध्यम वह भावी पीढ़ि व शहरी जन को इस कला से जोड़ सकेंगे, पेडना क्षेत्र हस्तनिर्मित ब्लॉक प्रिन्टिग कलमकारी वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है। लगभग पूरे देश में कलमकारी वस्त्रों की निर्यात पेडना से ही किया जाता है। समाज में कलमकारी वस्त्रों की बढ़ती मंाग के कारण इस शैली का एक बड़ा भाग रासायनिक रंग व स्क्रीन प्रिंट में कार्य

करने लगा है। श्रीनिवास संभवतः एकमात्र ऐसे कलाकार हैं जो अभी पारम्परिक हस्तनिर्मित शैली में कार्य कर रहे है। 2002 में इन्होने सफेद वस्त्र पर ब्लॉक प्रिंट कर निर्यात करना प्रारम्भ किया था। 2014 में स्थानीय मांग के पश्चात् साड़ी व बेडशीट निर्मित करना भी प्रारम्भ किया।ख्11, यह कलमकारी लोक कला के लिए इनके द्वारा किया गया एक सफल प्रयास रहा। वर्तमान समय में पेडना कलमकारी मुद्रण शैली का वृहद केन्द्र है। कलाकार श्रीनिवास कलमकारी लोक कला के मूल स्वरूप को संरक्षित करने में प्रयासरत है। यह प्रतिमाह अमेरिका, नीदरलैण्ड, जापान व कुछ अन्य यूरोपीय देशो में भी कलमकारी वस्त्रों का निर्यात करते है । भारत में कलमकारी का व्यापार वृहद है जिसमें कलमकारी साड़ियों की अत्यधिक मांग रहती है। कुछ ऑनलाइन वेबसाइट्स के द्वारा कॉटन में निर्मित मूल कलमकारी साड़ियाँ 4 से 5 हजार व सिल्क में निर्मित साड़ियाँ 10 से 12 हजार में विक्रय होती हैं व यह साड़ियाँ पारम्परिक विधि में कलमकारी कलाकारों द्वारा बनाई जाती हैं। कला के इस बाजार में कुछ लोग कलमकारी कला को डिजिटल व स्क्रीन प्रिंटिग से वस्त्रों पर निर्मित करते हैं व उसे मूल कलमकारी वस्त्र कहकर भ्रमित करते हैं व 1000 रुपये की साड़ी को 3000 रुपयों में बेचते हैं। वस्त्र मंत्रालय ;डपदपेजतल व िज्मगजपसमद्ध द्वारा कुछ कलमकारी कलाकारों की सूची निर्धारित की गयी है जिनसे सोशल मीडिया के माध्यम से जुड़कर मूल कलमकारी साड़ियों को खरीदा जा सकता हैं। पारम्परिक रूप से निर्मित की गई कलमकारी साड़ियों के रंग भड़कीले नही होते हैं क्योकि प्राकृतिक रंग भड़कीले नही होते। डिजिटल प्रिंट में सभी फूल पत्ति एक समान प्रतीत होते हैं परन्तु पारम्परिक रूप से निर्मित की गयी साड़ियों के अलंकरण कुछ भिन्न दिखेगें क्योकि उसमें कलाकारों द्वारा अधिक बारिकी के साथ कार्य किया जाता है।

चित्र 6 कलमकारी लोक चित्रकला
https://laasyaart.com/kalamkari-a-traditional-indian-art-of-perfection/

अब कलमकारी कला साड़ी से बढ़कर कुर्ता, स्कर्ट, दुपट्टा, बेडशिट, तकिया, कवर, लैम्प, शेप, चूड़ी, नेकपीस भी अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं अर्थात वर्तमान समय में इन सभी लोक कलाओं को व्यवसाय से जोड़कर नवीन आयाम दिया जा रहा है। ये सभी लोककलाएँ वर्तमान में समकालीन प्रतीत होती हैं क्याकि वर्तमान में इन कलाओं को समाज में प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न माध्यम उपलब्ध हो गये हैं। इन लोक कलाओं ने अलग-अलग मात्रा में व्यवसायीकरण प्राप्त किया है। इनके व्यवसायीकरण के कारण ही आज ये कलाएँ जीवित हैं तथा हम इनसे परिचित हैं। समाज में लोगो को यह तो ज्ञात है कि ये भारत की प्रसिद्ध लोक कलाएँ है परन्तु यह कितने लोगो को ज्ञात है कि यह कलाएँ प्रसिद्ध होकर समाज में किस प्रकार अपना स्थान बनाई व यह कलाएँ सामान्य जन तक कैसे पहुँची साथ ही इसे प्रकाश में लाने के लिए किन व्यक्तियों का योगदान है अर्थात जो पारम्परिक मूल लोक चित्र है उनका समाज में प्रचार-प्रसार किया गया। जिससे वर्तमान में इनके व्यवसायिक पक्ष समाज में दृश्यमान हो सके साथ ही मैने इस शोध अध्ययन के माध्यम से लोक कला के कुछ नवीन आयामों को दिखाने का भी प्रयास किया है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Express Web Desk. (2018, April 3). Who was Kamaladevi Chattopadhyay?,The Indian EXPRESS.

Weisman, S.R. (1987, October 27). “Many Faces of the Mahabharata,New York Times.

Rani, D.A.(Ed.). (2015). Varli Lok Kala: Bharat ki Samriddha Sanskritik Virasat, Dr. Usha Kiran, Shri Hemant kumar, Bharat ki Lok Kalayen,Visual Art:Drawing and Painting Department, Raghunath Girls P G College.

Pandey, A. (2023, October 5). Aayojnon se Madhubani Painting ka Badh Raha Bajaar,Dainik Jagran.

Rani, D.A.(Ed.). (2015). Mithila Ki Lok Chitrakala Evam Vyavasaayeekaran ,Karuna Rajput,Bharat ki Lok Kalayen,Visual Art:Drawing and Painting Department,Raghunath Girls P G College.

Pandey, A. (2023, October 5). Aayojnon se Madhubani Painting ka Badh Raha Bajaar,Dainik Jagran.

Rao, B.G. (2019, September 21). Pitchuka Srinivas, the lone crusader,THE HINDU.